यहाँ से देखो

केदारनाथ सिंह



राधाकृष्ण

1983

केदारनाथ सिंह
नई दिल्ली

प्रथम संस्करण
1983

मूल्य
25 रुपये

10

प्रकाशक
राधाकृष्ण प्रकाशन
2, अंसारी रोड दरियागंज
नई दिल्ली 110002

मुद्रक
कमल प्रिंटर्स
9/5866 सुभाष मोहल्ला 2
गांधीनगर दिल्ली 110031

कैलाशपति निपाद के लिये

क्रम

कविता क्या है

कविता क्या है
हाथ की तरफ
उठा हुआ हाथ
देह की तरफ
झुकी हुई आत्मा
मृत्यु की तरफ
घरती हुई आँखें
क्या है कविता
कोई हमला
हमले के बाद पैरों को खोजते
लहूलुहान जूते
नायक की चुप्पी
विदूषक की चीख
बाला के गिरने पर
नाई की चिन्ता
एक पत्ती के टूटने पर
राष्ट्र का शोर
आखिर क्या है
क्या है कविता

मैंने जब भी सोचा
मुझे रामचन्द्र शुक्ल की मूँछें याद आयी
मूछों में दबी बारीक सी हँसी
हँसी के पीछे कविता का राज
कविता के राज पर
हसती हुई मूँछें !

एक ठेठ देहाती कार्यकर्ता के प्रति

वक्त बेवक्त
वह साइकिल दनदनाता हुआ चला आता है
कई बार मैं झुंझला उठता हूं
उसके इस तरह आने पर
उसके सवालों और उसके तम्बाकू पर
तिलमिला उठता हूँ मैं
मैं बेहद परेशान हो जाता हूँ
उसकी गलत सलत भाषा
उसके झब्बे से गिरती धूल
और उसके उन बालों पर
जो उसके माथे से पूरी तरह उड़ गये हैं

कई बार
उसकी भूकम्प सी चुप्पी
मुझे अस्तव्यस्त कर देती है

उसकी साइकिल में हवा
हमेशा कम होती है
हमेशा उसकी बात में हो

एक और कोई चेहरा
जिसे थाने पर बुलाया गया है

मुझे थाने से चिढ़ है
मैं थाने की धज्जियाँ उड़ाता हूँ
मैं उस तरफ इशारा करता हूँ
जिधर थाना नहीं है
जिधर पुलिस कभी नहीं जाती
मैं उस तरफ इशारा करता हूँ

वह धीरे से हँसता है
और मेरी मेज़ हिलने लगती है
मेरी मेज़ पर रखी किताबें
हिलने लगती हैं
मेरे सारे शब्द और अक्षर
हिलने लगते हैं

मैं उसे रोकता नहीं
न कहता हूँ कल परसों
दोपहर
शाम

वह उठता है
और दरवाज़ों को ठेलकर
चला जाता है बाहर

मेरी उम्मीद
उसका पीछा नहीं करती
सिर्फ कुछ देर तक
चील की तरह हवा में मँडराती है
और झपट्टा मारकर
ठीक उसी जगह बैठ जाती है
जहाँ से वह चला गया था

टूटा हुआ ट्रक

मैं पिछली बरसात से उसे देख रहा हूँ
वह वहाँ उसी तरह खड़ा है
टूटा हुआ और हैरान
और अब उसमें अँखुए फूट रहे हैं

मैं देख रहा हूँ
एक छोटी सी लतर
स्टीयरिंग की ओर बढ़ी जा रही है
एक ज़रा सी पत्ती
भोंपू के पास झुकी है
जैसे उसे बजाना चाहती हो
एक बहुत महीन और बेआवाज़ सी ठाक-पीट
लगातार जारी है समूचे ट्रक में
कोई नट खोला जा रहा है
कोई तार कसा जा रहा है
टूटा हुआ ट्रक
पूरी तरह सौंप दिया गया है
घास के हाथों में

और पास परेशान है
पहिये बदलने के लिए

मेरे लिए यह सोचना कितना सुखद है
कि कल सुबह तक सब ठीक हो जायेगा
मैं उठूंगा
और अचानक सुनूंगा भापू की आवाज
और घरघराता हुआ ट्रक चल देगा
तिनसुकिया या बोकाजान

शाम हो रही है
टूटा हुआ ट्रक उसी तरह खड़ा है
और मुझे घूर रहा है

मैं सोचता हूं
अगर इस समय वो वहां न होता
तो मेरे लिए कितना मुश्किल था पहचानना
कि यह मेरा शहर है
और ये मेरे लोग
और वो वो
मेरा घर

दो मिनट का मौन

भाइयो और बहनो
यह दिन डूब रहा है
इस डूबते हुए दिन पर
दो मिनट का मौन

जाते हुए पक्षी पर
रुके हुए जल पर
घिरती हुई रात पर
दो मिनट का मौन

जो है उस पर
जो नहीं है उस पर
जो हो सकता था उस पर
दो मिनट का मौन

गिरे हुए छिलके पर
टूटी हुई घास पर
हर योजना पर

हर विश्वास पर
दो मिनट का मौन

इस महान शताब्दी पर
महान शताब्दी के
महान इरादा पर
महान शब्दों
और महान वादों पर
दो मिनट का मौन

भाइयो और बहनो
इस महान विशेषण पर
दो मिनट का मौन

पानी मे घिरे हुए लोग

पानी मे घिरे हुए लोग
प्राथना नही करते
वे पूर विश्वास स देखते हैं पानी को
और एक दिन
बिना किसी सूचना के
खच्चर बैल या भस की पीठ पर
घर असबाब लादकर
चल देत हैं कही और

यह कितना अदभुत है
कि बाढ चाहे जितनी भयानक हो
उन्हें पानी मे
थोडी सी जगह जरूर मिल जाती है
थाडी सी धूप
थोडा सा आसमान

फिर वे गाड देते हैं खम्भे
तान देते हैं बोरे
उलझा देते हैं मूज की रस्सियाँ और टाट

पानी म घिरे हुए लोग
अपने साथ ले आते ह पुआल की गध
वे ले आते ह आम की गुठलियाँ
खाली टिन
भुने हुए चने
वे ले आते ह चिलम और आग

फिर बह जाते हैं उनके मवेशी
उनकी पूजा की घटी बह जाती है
बह जाती है महावीर जी की आदमकद मूर्ति
घरा की कच्ची दीवारें
दीवारा पर बने हुए हाथी घोडे
फूल पत्ते
पाट पटोरे
सब बह जाते है

मगर पानी म घिरे हुए लाग
शिकायत नही करते
वे हर कीमत पर अपनी चिलम के छेद म
कही न कही बचा रखते हैं
थोडी सी आग

फिर डूब जाता है सूरज
कही से आती हैं
पानी पर तैरती हुई
लोगो के बालने की तेज आवाजें
कही स उठता है धुआ
पेडा पर मँडराता हुआ
और पानी मे घिरे हुए लोग
हो जाते हैं बेचन

वे जला देते हैं
एक टुटही लालटेन
टाँग देते हैं किसी ऊँचे बाँस पर

बनारस

इस शहर म वसन्त
अचानक आता है
जब आता है ता मैंने देखा है
लहरतारा या मडुवाडीह की तरफ स
उठता है धूल का एक बवडर
और इस महान पुरान शहर की जीभ
किरकिरान लगती है

जो है वह सुगबुगाता है
जो नहीं है वह फेंकने लगता है पचखियाँ
आदमी दशाश्वमेध पर जाता है
और पाता है घाट का आखिरी पत्थर
कुछ और मुलायम हो गया है
सीढ़िया पर बठे बन्दरा की आँखा म
एक अजीब सी नमी है
और एक अजीब सी चमक स भर उठा है
भिखारियो के कटोरा का खालीपन

तुमने कभी दखा है
खाली कटोरा म बसन्त का उतरना !

यह शहर इसी तरह खुलता है
इसी तरह भरता
और खाली होता है यह शहर
इसी तरह रोज़-रोज़ एक अनन्त शव
ले जाते है कधे
अँधेरी गली से
चमकती हुई गगा की तरफ

इस शहर म धूल
धीरे धीरे उडती है
धीरे धीर चलते हैं लोग
धीरे धीरे बजते हैं घटे
शाम धीरे धीरे होती है

यह धीरे धीरे होना
धीरे धीरे हाने की एक सामूहिक लय
दृढता म बाधे है समूचे शहर को
इस तरह कि कुछ भी गिरता नही है
कि हिलता नही है कुछ भी
कि जो चीज़ जहा थी
वही पर रखी है
कि पानी वही है
कि वही पर बँधी है नाव
कि वही पर रखी है तुलसीदास की खडाऊँ
सक्डो बरस से

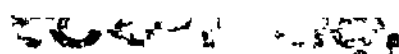
कभी सई साँझ
बिना किसी सूचना के
घुस जाओ इस शहर म
कभी आरती के आलोक म
इसे अचानक देखो
अदभुत है इसकी बनावट
यह आधा जल मे है
आधा मत्र म

आधा फूल मे है
आधा शव म
आधा नीद मे है
आधा शख मे
अगर ध्यान से देखो
तो यह आधा है
और आधा नही है

जो है वह खडा है
बिना किसी स्तम्भ के
जो नही है उसे थाम है
राख और रोशनी के ऊचे ऊँचे स्तम्भ
आग के स्तम्भ
और पानी के स्तम्भ
धुएँ के
खुशबू के
आदमी के उठे हुए हाथा के स्तम्भ

किसी अलक्षित सूय को
देता हुआ अघ्य
शताब्दिया स इसी तरह
गगा के जल म
अपनी एक टाँग पर खडा है यह शहर
अपनी दूसरी टाँग से
बिलकुल बेखबर

बसन्त



और बसन्त फिर आ रहा है
शाकुन्तल का एक पन्ना
मेरी आलमारी से निकलकर
हवा में फरफरा रहा है
फरफरा रहा है कि मैं उठूं
और आसपास फैली हुई चीजों के कानों में
कह दूं 'ना
एक दृढ
और छोटी सी 'ना
जो सारी आवाजों के विरुद्ध
मेरी छाती में सुरक्षित है

मैं उठता हूँ
दरवाज़े तक जाता हूँ
शहर को देखता हूँ
हिलाता हूँ हाथ
और ज़ोर से चिल्लाता हूँ
ना ना ना

मैं हैरान हूँ
मैंने कितने बरस गँवा दिये
पटरी से चलते हुए
और दुनिया से कहते हुए
हाँ हाँ हाँ

पृथ्वी रहेगी

मुझे विश्वास है
यह पृथ्वी रहेगी
यदि और कही नही तो मेरी हड्डियो मे
यह रहेगी जैसे पेड के तने मे
रहते हैं दीमक
जैसे दाने मे रह लेता है घुन
यह रहेगी प्रलय के बाद भी मेरे अन्दर
यदि और कही नही तो मेरी जबान
और मेरी नश्वरता मे
यह रहेगी

और एक सुबह मैं उठूगा
मैं उठूगा पृथ्वी समेत
जल और कच्छप समेत मैं उठूगा
मैं उठूगा और चल दूगा उससे मिलने
जिससे वादा है
कि मिलूगा

नक्शा

मैं बाजार गया
मैंने बाजार में खरीदा एक नक्शा
नक्शे में बहुत कुछ था
जिसे मैं जानता नहीं था

मैं जानता नहीं था
इसलिए नक्शे को ले आया घर
टाँग दिया दीवार पर

अब दीवार भरी पूरी लग रही थी
जैसे नक्शा पृथ्वी को ले आया हो
मेरे घर में

मैं खुश था नक्शे में
क्योंकि वहाँ इतनी जगह थी
इतनी सारी जगह
कि मैं उसमें सदियों तक रह सकता था
अपने पूरे कुनबे के साथ

मुझे आश्चर्य हुआ
मैं इतने दिनो तक
बिना किसी नक्शे के जीता रहा
पृथ्वी पर

फिर नक्शा जैसे कोई किला हो
मैं उसमे घुसा
एक किसान का बेटा मैं
सुबह से शाम तक
भटकता रहा नक्शे म
मैं वहाँ घूमा गडेरिया के पीछे पीछे
और नदियो की यादाश्त मे
मैं वहा लेटा रहा
अरारात के पत्थरो पर
और युद्ध के मैदानो मे
मैंने वहा बहुत कुछ बहुत कुछ देखा
पर नक्शे म
अपनी दीवार पर टँगे हुए
दुनिया के उस महान नक्शे म
मुझे नही मिला
नही मिला अपना घर

नक्शे म कोई राजा नही था
पर कानून था
नक्शे मे

कस्बे की धूल

दिन की आखिरी बस जा रही है
कस्बे में भर गयी है धूल
एक बेहद चिकनी और गाढ़ी धूल
जिसे मैं जानता हूँ

मैं जानता हूँ क्योंकि यह धूल
इस कस्बे की
और मेरे पूरे देश की
सबसे ज़िंदा और खूबसूरत चीज़ है
सबसे बेचैन
सबसे सक्रिय
पृथ्वी की सबसे ताज़ा
और प्राचीनतम धूल
जो यहाँ दिन भर
आदमी के साथ साथ
धुनती है रूई
बनाती है गारा
गरमाती है पानी

गूथती है आटा
चराती है बकरियाँ

सचाई यह है कि इस सारे माहौल मे
सिफ यह धूल है
सिफ इस धूल का लगातार उडना
जो मेरे यकीन को अब भी बचाये हुए है
नमक मे
और पानी मे
और पृथ्वी के भविष्य मे
और दन्तकथाओ मे

जानवर

तुमने कभी देखी है
जानवर की चाल की गरिमा
अगर नही तो मेरे पास आओ
और यहा स देखो
वहाँ भरी दोपहरी म
झडते हुए पत्तो के नीचे
चला जा रहा है एक जानवर

यह उसके चलने की आवाज है
जो पत्ता म
पीतल की तरह बज रही है

देखो देखो
उसके पुट्ठे दिखायी पड रह हैं
शायद कान
शायद गदन
शायद गदन के पास की धारियाँ
शायद कुछ नही
महज एक हिंस चमक

जो पत्तो की रगड से पैदा हो रही है
मैं उसे जानवर की आँख कहूँगा
तुम चाहो तो पत्तो के बीच स
हवा का गुजरना कह सकते हो

तुम क्या करते हो
अपन अकेलेपन का ?
जानवर उसस खेलता है
दखा देखो कितनी शान से
अपने अकेलेपन को चीरता फाडता
चला जा रहा है जानवर
वहाँ अकेलापन
एक जबडा है
मसूढा और दाँत है अकेलापन
अकेलापन उसके पुट्ठो मे
गम खून की तरह भरा है

अपनी ऊब
और आज़ादी से बेखबर
चला जा रहा है जानवर
और भरी दोपहरी म
एक समूची गरिमा
झडते हुए पत्ता के नीचे
तहस नहस हा रही है

सीटी

नीद किन पहाडा स आती है
क्या उसके डने होते हैं
क्या हर शहर म
एक ही समय आती है नीद
सूरज डूबने के कितनी देर बाद
झँपने लगती हैं
एक थके हुए आदमी की पलकें
बिस्तर पर जाने के कितने समय बाद
उचट जाती है
एक भरे पूरे आदमी की नीद

शायद तीन बज रहे है
सुनो सुनो
कोई सीटी बजा रहा है
क्या नीद कोई सीटी है
घरा की ईंट
और पलस्तर म दबी हुई

सुनो सुनो
जरूर कोई सीटी बजा रहा है
'पहरेवाला होगा'—
मैं खुद से कहता हूँ
और करवट बदल लेता हूँ
मैं बन्द करता हूँ आखें
कि मुझे बाहर सुनायी पडती है
फिर वही सीटी
जिसके जवाब म बज उठती है
कही कोई दूसरी
किसी दूसरी दिशा म
जैस अँधेरे मे
मशाल स मशाल
जलायी जा रही हो

मगर तीन बजे रात मे
क्या सीटी
और किसके लिए

क्या तीन बजे रात म
लोग सोते रह
लोगो की नीद म आते रहे सपने
इसके लिए सीटी का बजना
जरूरी है

जो जरूरी है
उसकी एक अन त सूची
रखी है मेरे सिरहाने
क्या मैं उठू
और उसे ज़ोर ज़ोर स पढना शुरू करूँ
तीन बजे रात म

मगर तीन बजे रात मे
क्या क्या

ऐसा क्या है
कि जब सारा शहर सो रहा है
तो एक अकेला आदमी
सबकी नींद की हिफाजत में
सड़कों पर
गलियों में
सीटी बजाता है

उसके जागते रहने
और हमारे सो जाने के बीच
यह कौन सा नाता है ?

कीडे की मृत्यु

मरा पडा है कीडा
उसको देख पडा यो गुमसुम
क्या होती है पीडा
क्या मैं ठिठक गया हू
क्या मैं खोज रहा हूँ उसमे तडपन
कोई हरकत
क्यो मुझको लगता है उसका होना
बहुत जरूरी था
क्या हो जाता
उस होने से ?
क्या लेबनान मे जो कुछ घटित हुआ है
वह रुक जाता ?

कीडे तो मरते रहते हैं
हर पल
हर क्षण
दुनिया को कुछ और साफ सुदर करने को
मर जाते हैं कीडे
मरना उनका

गुदरता के हित म है
फिर क्या होती है पीड़ा
जबकि सामने बिना चीख के
मरा पड़ा है कीड़ा

क्या मैं चाह रहा हूँ
वह कुछ हिले
रेंगना फिर स शुरू करे वह
क्या मैं रुका हुआ हूँ

कितनी देर
एक कीड़े के मत्यु शोक म
मौन खड़ा रहना होता है
मानव को ।

शहर मे रात

बिजली चमकी, पानी गिरने का डर है
वे क्या भागे जाते हैं जिनके घर है
वे क्या चुप हैं जिनको आती है भाषा
वह क्या है जो दिखता है धुआ धुआं सा
वह क्या है हरा हरा सा जिसके आगे
हैं उलझ गये जीने के सारे धागे
यह शहर कि जिसम रहती हैं इच्छाए
कुत्ते भुनगे आदमी गिलहरी गाएँ
यह शहर कि जिसकी जिद है सीधी-सादी
ज्यादा-स-ज्यादा सुविधा सुख आजादी
तुम कभी देखना इस सुलगते क्षण मे
यह अलग-अलग दिखता है हर दपण म
साथिया, रात आयी, अब मैं जाता हूँ
इस आने जाने का वेतन पाता हूँ
जब आंख लगे तब सुनना धीरे धीरे
किस तरह रात भर बजती हैं जजीरें

बाज़ार

'आओ बाज़ार चलें'
उसने कहा
'बाज़ार म क्या है
मैंने पूछा
'बाज़ार म धूल है
उसने हँसते हुए कहा

एक अजीब सी मिट्टी की चमक
उसक हँसने मे थी
जो मुझे अच्छी लगी

मैंने पूछा— धूल !
धूल म क्या है'
'जनता —उसने बेहद सादगी स कहा

मैं कुछ दर स्तब्ध खड़ा रहा
फिर हम दोनो चल पड़े
धूल और जनता की तलाश म

वहा पहुँचकर
हमे आश्चय हुआ
बाज़ार मे न धूल थी
न जनता

दोनो को साफ कर दिया गया था

ग्राज की धूप मे

क्या तुम विश्वास करोग
कि आज की धूप म
अगली सदी के किसी शनिवार की गर्मी है

कि इस समय
तुम्हारे शहर के सारे पौधे
अपनी खुराक ल रहे है
आठवी सदी की मिट्टी म दबी
किसी हरी खाद से

कि अभी अभी
तुम्हारे नल स
टपक रहा था जो पानी
वह अड़तीसवी सदी क
किसी कुएँ स आ रहा था

वापसी

आज उस पक्षी को फिर देखा
जिसे पिछले साल देखा था
लगभग इन्हीं दिनों
इसी शहर में

क्या नाम है उसका
खंजन
टिटिहिरी
नीलकंठ
मुझे कुछ भी याद नहीं
मैं कितनी आसानी से भूलता जा रहा हूँ
पक्षियों के नाम
मुझे सोचकर डर लगा

आखिर क्या नाम है उसका
मैं खड़ा खड़ा सोचता रहा
और सिर खुजलाता रहा

और यह मेरे शहर मे
एक छोटे-से पक्षी के लौट आने का विस्फोट था
जो भरी सडक पर
मुझे देर तक हिलाता रहा

कलाकार से

चट्टान को तोडो
वह सुंदर हो जायगी
उसे और तोडो
वह और, और सुंदर होती जायेगी

अब उसे उठाओ
रख लो कंधे पर
ले जाओ किसी शहर या कस्बे में
डाल दो किसी चौराहे पर
तेज धूप में तपने दो उसे

जब बच्चे आयेंगे
उसमें अपने चेहरे तलाश करेंगे

अब उसे फिर से उठाओ
अबकी ले जाओ किसी नदी या समुद्र के किनारे
छोड़ दो पानी में
उस पर लिख दो वह नाम

जो तुम्हारे अन्दर गूँज रहा है
वह गाथ बन जायगी

अब उसे फिर न तोड़ो
फिर न उसी जगह खड़ा करो चट्टान को
उसे फिर न उठाओ
डाल दो किसी नींव में
किसी टूटी हुई पुलिया के नीचे
टिका दो उसे
उसे रख दो
किसी थके हुए आदमी के आसपास

अब लौट आओ
तुमने अपना काम पूरा कर लिया है
अगर कंधे दुख रहे हों
कोई बात नहीं
यकीन करो कंधों पर
कंधों के दुखने पर यकीन करो
यकीन करो यकीन करने पर
यकीन न करने पर यकीन करो
यकीन करो
और खोज लाओ
कोई नयी चट्टान

पानी एक रोशनी है

इंतजार मत करो
जो कहना हो कह डालो
क्योंकि हो सकता है फिर कहने का
कोई अर्थ न रह जाय

सोचो
जहाँ खड़े हो वहीं से सोचो
चाहे राख से ही शुरू करो
मगर सोचो

उस जगह की तलाश व्यर्थ है
जहाँ पहुँचकर यह दुनिया
एक पोस्ते के फूल में बदल जाती है

नदी सो रही है
उसे सोने दो
उसके सोने से
दुनिया के होने का अन्दाज मिलता है

जो तुम्हारे मन में गूंज रहा है
यह गाथा बन जायगी

अब उसे फिर न तोड़ो
फिर न उसी जगह गाड़ा करो चट्टान को
उसे फिर से उठाओ
डाल दो किसी नींव में
किसी टूटी हुई पुलिया के नीचे
टिका दो उसे
उसे रख दो
किसी थके हुए आदमी के आसपास

अब लौट आओ
तुमने अपना काम पूरा कर लिया है
अगर कंधे दुख रहे हों
कोई बात नहीं
यकीन करो कंधों पर
कंधों के दुखने पर यकीन करो
यकीन करो यकीन करने पर
यकीन न करने पर यकीन करो
यकीन करो
और खोज लाओ
कोई नयी चट्टान

जनहित का काम

वह एक अदभुत दृश्य था

मेह बरसकर खुल चुका था
खेत जुतने को तयार थे
एक टूटा हुआ हल मेड पर पडा था
और एक चिडिया बारबार-बारबार
उसे अपनी चोच से
उठाने की कोशिश कर रही थी

मैंने देखा
और मैं लौट आया
क्योंकि मुझे लगा मेरा वहाँ होना
जनहित के उस काम म
दखल देना होगा

पूछो
चाहे जितनी बार पूछना पड़े
चाहे पूछने में जितनी तकलीफ़ हो
मगर पूछो
पूछो कि गाड़ी अभी कितनी लेट है

अँधेरा बढ़ रहा है
अपनी कविता की किताब रख दो एक तरफ़
और सुनो सुनो
अँधेरे में चल रहे हैं
लाखों-करोड़ों पर

पानी एक रोशनी है
अँधेरे में यही एक बात है
जो तुम पूरे विश्वास के साथ
दूसरे से कह सकते हो

जनहित का काम

वह एक अदभुत दृश्य था

मेह बरसकर खुल चुका था
खेत जुतने को तयार थे
एक टूटा हुआ हल मेड पर पडा था
और एक चिडिया बारबार-बारबार
उसे अपनी चोच से
उठाने की कोशिश कर रही थी

मैंने देखा
और मैं लौट आया
क्योंकि मुझे लगा मेरा वहाँ होना
जनहित के उस काम मे
दखल देना होगा

इन्हीं शब्दों मे

इन्ही शब्दों म
कही चलत होंगे लोग
वहा गिरती होगी बफ
कही गरदन तक धँसा हुआ बफ म
खडा होगा ईश्वर
कही एक छुरा तेज किया जा रहा होगा
कही एक स्त्री कराह रही होगी
कही एक बूढे मल्लाह की चिलम स
उठना होगा धुआँ इन्ही शब्दो म

इन्ही शब्दा म
कही होगा एक शहर
जहाँ वे रहते हैं
कही होगा एक घर
जहाँ मैं नही रहता

मध्यवर्गीय साखी

सुबह हुई
और उसने सोचा
दुनिया बदलने से पहले
मुझे बदल डालनी चाहिए अपनी चादर
जो कि मैली हो गयी है

उठो कि कहीं कुछ गलत हो गया है
उठो कि इस दुनिया का सारा कपडा
फिर से बुनना होगा
उठो मेरे टूटे हुए धागो
और मेरे उलझे हुए धागो उठो

उठो
कि बुनने का समय हो रहा है

मुझे किस तरह पता चलेगा
मेरी भूख मे
मेरी पीठ का दुखना
शामिल है या नही

मैं क्यो
और किस तक से हिं दू हूँ
क्या मैं कभी जान पाऊँगा

यह अग्निकिरीटी मस्तक
जो है मेरे कधो पर
यह जिन्दा भारी पत्थर
इसका क्या होगा ?

उस आदमी को देखो

उस आदमी को देखो जो सड़क पार कर रहा है
वह कहाँ से आ रहा है
मुझे नहीं मालूम
कहाँ जायेगा
यह बताना कठिन है

पर इतना साफ है
वह सड़क के इस तरफ खड़ा है
और उस तरफ जाना चाहता है
उसका एक पाँव हवा में उठा है
और दूसरा उठने का इंतज़ार कर रहा है

जो उठा है
मैं सुन रहा हूँ वह दूसरे से कह रहा है
'जल्दी करो, जल्दी करो
यह सड़क है

और सड़क एक ऐसी चीज़ है भाइयो
जो हमेशा वहीं पड़ी रहती है

और चूंकि वह हमेशा वहीं पड़ी रहती है
इसलिए हर आदमी को हर बार
नये सिरे से पार करनी पड़ती है अपनी सड़क

तो वह आदमी जो सड़क पार कर रहा है
हो सकता है तीन हज़ार सात सौ सतीसवीं बार
पार कर रहा हो फिर वही सड़क
जिसे कल वह फिर पार करेगा
और उसके अगले दिन फिर
और हो सकता है अगले असंख्य वर्षों तक
वह बारबार उसी को
और सिर्फ उसी को पार करता रहे

देखो देखो
वह जब भी वहाँ खड़ा है
उत्सुक और नाराज़
और यह मुझे अच्छा लग रहा है

मुझे आदमी का सड़क पार करना
हमेशा अच्छा लगता है
क्योंकि इस तरह
एक उम्मीद सी होती है
कि दुनिया जो इस तरफ है
शायद उससे कुछ बेहतर हो
सड़क के उस तरफ

ऊँचाई

मैं वहाँ पहुँचा
और डर गया

मेरे शहर के लोगो
यह कितना भयानक है
कि शहर की सारी सीढ़ियाँ मिलकर
जिस महान ऊँचाई तक जाती हैं
वहाँ कोई नहीं रहता !

सम्पादक के नाम पत्र

प्रिय सम्पादक जी
आपने कविता मांगी है
और मेरे शहर में पिछले कई दिनों से गिर रहा है पानी
मूसलाधार पानी
मैं चाहता हूँ कविता से पहले
यह खबर आप तक पहुँचे

अब कल ही की बात है
मैं बाहर निकला और समूचा भीग गया
किसी और को बुखार था
कोई और खाँसता रहा सारी रात
मेरे आसपास
मेरी छाती में

और पानी अब भी गिर रहा है
एक कौआ इतना खुश है
कि अपने डैनों से बार बार
पानी को फेंक रहा ऊपर

यह एक रोमांचकारी दृश्य है सम्पादक जी
बारिश किसी चोर दरवाजे से
घुस आयी है मेरे घर के अन्दर
पानी ने सारे घर में
बना लिये हैं घासल
पानी एक तिलिस्म है सम्पादक जी
क्या मैं इस तिलिस्म को तोड़ सकता हूँ
क्या मैं ठीक इसी समय
बारिश की ऐसी तैसी करता हुआ
जा सकता हूँ बाहर
और लौटकर फिर वहीं आ सकता हूँ
जहाँ से मैंने पहले पहल देखी थी बारिश

तीन बजे हैं
पानी अब भी गिर रहा है
मुझे देर हो रही है सम्पादक जी
मुझे अपनी बच्ची के लिए दवा लानी है

अगर मैं नमक का ढेला होता
बारिश को देखता रहता
अपने अन्दर अपने बाहर

पर यह मुमकिन नहीं है सम्पादक जी
मुझे बाज़ार जाना है
और दवा लानी है

बारिश किसकी ज़िम्मेवारी है
मुझे नहीं मालूम
पर मैं चाहता हूँ आज की तारीख में
यह दर्ज किया जाय
कि मैंने अभी अभी
अपने दरवाज़े पर रेंगता हुआ
एक ज़िन्दा और लाल केंचुआ देखा

सुई और तागे के बीच मे

माँ मेरे अकेलेपन के बारे मे सोच रही है
पानी गिर नही रहा
पर गिर सकता है किसी भी समय
मुझे बाहर जाना है
और मा चुप है कि मुझे बाहर जाना है

यह तय है
मैं जाऊँगा तो मा को भूल जाऊँगा
जैसे मैं भूल जाऊँगा उसकी कटोरी
उसका गिलास
वह सफेद साडी जिसमे काली किनारी है
मैं एकदम भूल जाऊँगा
जिसे इस समूची दुनिया मे माँ
और सिफ मेरी माँ पहनती है

उसके बाद सर्दियाँ आ जायेंगी
और मैंने देखा है कि सर्दियाँ जब भी आती हैं
तो माँ थोडा और झुक जाती है
अपनी परछाईं की तरफ

यह एक साम्राज्यवादी दृश्य है सम्पादक जी
बारिश किसी चोर दरवाज़े से
घुस आयी है मेरे घर के अन्दर
पानी ने सारे घर में
बना लिये हैं घोंसले
पानी एक तिलिस्म है सम्पादक जी
क्या मैं इस तिलिस्म को तोड़ सकता हूँ
क्या मैं ठीक इसी समय
बारिश की ऐसी तैसी करता हुआ
जा सकता हूँ बाहर
और लौटकर फिर वहीं आ सकता हूँ
जहाँ से मैंने पहले पहल देखी थी बारिश

तीन बजे हैं
पानी अब भी गिर रहा है
मुझे देर हो रही है सम्पादक जी
मुझे अपनी बच्ची के लिए दवा लानी है

अगर मैं नमक का ढेला होता
बारिश को देखता रहता
अपने अन्दर अपने बाहर

पर यह मुमकिन नहीं है सम्पादक जी
मुझे बाज़ार जाना है
और दवा लानी है

बारिश किसकी ज़िम्मेवारी है
मुझे नहीं मालूम
पर मैं चाहता हूँ आज की तारीख़ में
यह दर्ज किया जाय
कि मैंने अभी-अभी
अपने दरवाज़े पर रेंगता हुआ
एक ज़िन्दा और लाल केंचुआ देखा

सुई और तागे के बीच मे

माँ मेरे अकेलेपन के बारे मे सोच रही है
पानी गिर नही रहा
पर गिर सकता है किसी भी समय
मुझे बाहर जाना है
और माँ चुप है कि मुझे बाहर जाना है

यह तय है
मैं जाऊँगा तो माँ को भूल जाऊँगा
जसे मैं भूल जाऊँगा उसकी कटोरी
उसका गिलास
वह सफेद साडी जिसमे काली किनारी है
मैं एकदम भूल जाऊँगा
जिसे इस समूची दुनिया मे माँ
और सिर्फ मेरी माँ पहनती है

उसके बाद सर्दियाँ आ जायेंगी
और मैंने देखा है कि सर्दिया जब भी आती हैं
तो माँ थोडा और झुक जाती है
अपनी परछाइ की तरफ

ऊन के बारे मे उसके विचार
बहुत सख्त हैं
मृत्यु के बारे मे बेहद कोमल
पक्षियो के बारे म
वह कभी कुछ नही कहती
हालांकि नीद मे
वह खुद एक पक्षी की तरह लगती है

जब वह बहुत ज्यादा थक जाती है
तो उठा लेती है सुई और तागा
मैंने देखा है कि जब सब सो जाते हैं
तो सुई चलाने वाले उसके हाथ
देर रात तक
समय को धीरे धीरे सिलते हैं
जसे वह मेरा फटा हुआ कुर्ता हो

पिछले साठ बरसो से
एक सुई और ताग के बीच
दबी हुई है मा
हालांकि वह खुद एक चरखा है
जिस पर साठ बरस बुने गये हैं
धीरे धीरे तह पर तह
खूब मोटे और गझिन और खुरदुरे
साठ बरस

सामना

जब मैं वहाँ पहुँचा
तो किसी को नहीं याद था आज कौन सी तारीख है
कौन सी सदी

यह किवाड़ों के
बन्द होने का समय था
और यह समय था जब शहर में
सूखे हुए कपड़े तह किये जाते हैं

हालाँकि नाई की दुकान पर
मुझे समय के बारे में कोई सूचना नहीं मिली

मैंने देर तक
एक पीली सी बस का इंतज़ार किया
और जब समय बीत चुका
तो अपने कोट को उतारकर
कंधे पर रख लिया

अब समय मेरी गरदन पर रखा हुआ था

मुझे बिलकुल आश्चय नही हुआ
जब मेरे दतचिकित्सक ने मुझसे कहा
इस समय आदमी की सारी उम्र
इस दाव पर लगी है कि उसके पास
सब कुछ खत्म हो जाने के बाद भी
थोडा सा मजन हमेशा बचा रहे

बाहर बारिश हो रही थी
और इस बात के आसार थे
कि शहर किसी भी क्षण
एक मेढक की उछाल म
तब्दील हो सकता है

मैंने उनकी ओर देखा
किनकी ओर
यह नही कहा जा सकता
उस धुधले से कमरे म
एक काली सी मेज थी
जिसके चारो ओर वे झुके थे

वे बोल रहे थे
या चुप थे
दावे के साथ मैं कुछ नही कह सकता
क्योकि सिफ उनके जबडे हिल रह थे
क्योकि सिफ मैं वहा खडा था
और उनके हिलत हुए जबडा को देखकर
यह समझने की कोशिश कर रहा था
कि वह पृथ्वी का कौन सा अक्षाश है
जहा मैं खडा हू

जहाँ तक मुझे याद है
उस समय मैं
अपने बिस्तरबन्द के बारे म सोच रहा था
बल्कि यह कहना ज्यादा सही होगा

कि एक बिस्तरबन्द को
इतिहास मे रख देने से
जो लहरें पैदा होती हैं
उनके बारे मे

पर असल मे
मैं उस जगह के बारे मे सोच रहा था
जहा मेरी आत्मा
पिछले कई दिनो स
मेरी रीढ की हडडी से रगड खा रही थी।

मुझे बिलकुल आश्चय नही हुआ
जब मेरे दन्तचिकित्सक ने मुझसे कहा
इस समय आदमी की सारी उम्र
इस दाव पर लगी है कि उसके पास
सब कुछ खत्म हो जाने के बाद भी
थोडा सा मजन हमेशा बचा रहे

बाहर बारिश हो रही थी
और इस बात के आसार थे
कि शहर किसी भी क्षण
एक मेढक की उछाल मे
तब्दील हो सकता है

मैंने उनकी ओर दखा
किनकी ओर
यह नही कहा जा सकता
उस धुधले से कमरे मे
एक काली सी मेज थी
जिसके चारो ओर वे झुके थे

वे बोल रहे थे
या चुप थे
दावे के साथ मैं कुछ नही कह सकता
क्योकि सिफ उनके जबडे हिल रहे थे
क्योकि सिफ मैं वहाँ खडा था
और उनके हिलते हुए जबडो को देखकर
यह समझने की कोशिश कर रहा था
कि वह पृथ्वी का कौन सा अक्षाश है
जहाँ मैं खडा हू

जहाँ तक मुझे याद है
उस समय मैं
अपने बिस्तरबन्द के बारे मे सोच रहा था
बल्कि यह कहना ज्यादा सही होगा

मेरे ईश्वर
मुझे क्या करना चाहिए इस दिन का
जिसमे कोयला नही है
मुझे क्या करना चाहिए इस ठड का
जो बराबर बढती जा रही है
क्या मैं भी इतजार करूँ
जैसे सब कर रहे हैं
क्या मैं उठू और अपने आपको बदल लू
एक कोयला झोकने वाले बेलचे मे
क्या मैं बाजार जाऊँ
और अपनी आत्मा के लिए खरीद लू
एक अच्छा-सा कनटोप

मेरे ईश्वर
क्या मेरे लिए इतना भी नही कर सकते
कि इस ठड से अकडे हुए शहर को बदल दो
एक जलती हुई बोरसी मे!

सुबह हो रही है मैंने हवा से कहा

सुबह हो रही है मैंने हवा से कहा
और मैंने सुना रोशनी मेरे छज्जे पर
पानी की तरह बज रही थी

सुबह सुबह मैंने एक बूढ़े आदमी को
हसते हुए देखा
और मैंने कहा
हसो और जिन्दा रहो

मैंने अखबार वाले से कहा
अखबार जरूरी है
पर उससे भी ज्यादा जरूरी है वह काली कुतिया
जो वहा धूप में
अपने तीन बच्चो को दूध पिला रही है

मैंने दूध वाले से कहा
दूध को बचाओ
क्योंकि हो सकता है अगला महायुद्ध
उसी के लिए लडा जाय

मैंने कुम्हार से कहा
चाक को नही
अपने घडे को देखो
और देखो देखो वह किस तरह
तुम्हारे हाथ की लकीरा मे ढलता जा रहा है

'नमस्कार' मैंने उस आदमी से कहा
जो मेरी बगल से जा रहा था
'नमस्कार' उसने कहा
और भीड मे गायब हो गया

इस तरह मैंने सबसे
सब कुछ कहा
सिफ नही कह सका
उसी से वह
जा मुझे कहना था
सिफ उसी स

द`तकथा

पुरानी हवेली मे
आज भी रखी है एक `गी तलवार
हवेली मे क`ाई नही रहता
पुरानी हवेली लोगा की यादाश्त म
जब स है
इसी तरह खाली है
पर लागा की यादाश्त मे
ठीक वही पर और उसी तरह रखी है
एक नगी तलवार

बहुत सी कहानियाँ हैं
तलवार के बारे म
और लोगो के बारे मे
और उसके बारे मे जो तलवार और लोगो के बीच
न जाने कब स उलभा पडा है

इस बस्ती मे शाम होते ही
पीपल के पत्ता
और बाँस के झुरमुट से

उठती हैं कहानियाँ
कहानियाँ मानो जला देती हैं कोई चिराग़
कहीं हवेली के अन्दर
और तलवार की परछाईं
हिलती है दीवार पर

बुज़ुर्ग कहते हैं
युगों पहले की बात है
भादों की एक शाम
धुर पच्छिम से उठते हुए बादल
बादलों में
बिजली सा काँपता हुआ डर
डर एक वनैले सूअर सा
सूंघता हुआ
हर घर और हर छप्पर को
गंगा चढ़ी थी
उधर चढ़ी हुई गंगा के पार खड़ी थीं
दुश्मन की फौजें
इधर कुसुमपुर गाँव के लोहसाँय में
पीटा जा रहा था लोहा
सुन्दर लोहा
गरम लोहा
बोलता हुआ लोहा

हौले हौले चलती थी भाथी
धीमे धीमे जलती थी आग
पर बूढ़े लोहार की छाती में
पूरे ज़ोर से धधक रहा था
समूचे गाँव का इकट्ठा कोयला

जितनी बार गिरता था हथौड़ा
उतनी बार
उसके माथे से गिरती थी

एक जिन्दा लाल चमकती हुई बूंद
जिसे लोहा पी जाता था

जिसे लोहा पी जाता था
दुश्मन तक पहुँच रही थी
सिर्फ उसी की चमक
सिर्फ उसी की रोशनी में
लोगों को दिख रहे थे
घर पेड़ आग और मैदान

रात ढलती जा रही थी
नदी के पार से आ रही थी
दुश्मन के घोड़ों के हिनहिनाने की आवाजें
और नदी के इस तरफ
बूढ़ा लोहार
अपनी अधबनी तलवार पर झुका हुआ
साँसों से खींच रहा था
लोहे के अन्दर की सारी खुशबू
सारा ताप
और तलवार ढलती जा रही थी
अपने आप

बुजुर्ग कहते हैं
इधर तलवार बनकर तैयार हुई
उधर बूढ़े लोहार ने तोड़ दिया दम

फिर लड़ाई हुई
और जमकर हुई

कई दिनों तक हल हँसिया और कुदाल
जहाँ पर पड़े थे
वहीं पर पड़े रहे
कई दिनों तक गंगा में बहता रहा खून
कौए मँडराते रहे ऊपर

और बुजुर्ग कहते हैं
जब लडाई खत्म हुई तो सबने देखा
मदान बची थी सिफ एक तलवार
नगी तलवार
चमचमाती तलवार

अब तलवार हवेली म कसे आयी
इसका सुराग कही नही मिलता
पुरानी हवेली म बहुत से छेद हैं
पर किसी से इतनी रोशनी नही आती
कि तलवार के बार म
कुछ खास पता चले
और तलवार है
कि न हिलती है
न डुलती है
न चुप रहती है
न बोलती है
बस दिन-रात हवली के सबस अँधेरे कोने म
आतक-सी पडी रहती है

इस बस्ती म पूछो
तो कोई कुछ नही कहता
हर आदमी उस तरफ इशारा करता है
और चुप हो जाता है

लोगो का खयाल है
तलवार म रहती है
लोहार की आत्मा

जाते हुए आदमी का बयान

सुबह की ठंडी धूप में
मैं अपना मस्तिष्क और एड़ियाँ धो रहा हूँ
जाने से पहले
अभी मुझे बहुत से काम हैं
अभी मुझे कोयला सुलगाना है
अभी मेरे कपड़े सूख रहे हैं
अभी थोड़ी देर मुझे लोहे की तरह तपना होगा
फिर मैं उतर जाऊँगा
अपने सारे कपड़ों के सबसे हलके
और महीन सूत में
ताकि फिर लौट सकूँ
ठंड और धूल भरी इसी दुनिया में
जहाँ मेरी एड़ियाँ बराबर घिसती जा रही हैं

सचाई यह है
कि मेरे लिए यह दिन
एक सफेद खड़िया है
जिसे मैं अपने बेटे को देना चाहता हूँ
यह जानते हुए कि वह

इसे तोड डालेगा
सचाई यह है कि टूटने की आवाज
मुझे अच्छी लगती है
मुझे बहुत सी चीजें महज इसलिए अच्छी लगती हैं
कि मैं उनके अन्दर सुनता हूँ
एक बहुत मद्धिम सी टूटन की आवाज

मैंने पहली बार यह आवाज
दिल्ली मे सुनी थी
और मैं स्वीकार करूँ
दिल्ली मुझे अच्छी लगती है !

और अब
जबकि मैंने अपना सामान समेट लिया है
जाहिर है मैं कोई वादा नही कर सकता
सिर्फ इतना कहूँगा
कि अगर सब कुछ ठीक ठाक रहा
और पृथ्वी इसी तरह घूमती रही
अपनी धुरी पर बदस्तूर
तो एक न एक दिन
मैं तुम्हे जरूर बताऊँगा
कि दिन की पहली आच को
समुद्र की आखिरी मछली तक पहुँचने मे
कितना समय लगता है

इस समय
मेरे ललाट पर जो पसीना है
उसमे मेरी मिहनत के अलावा
कुछ और भी जरूर है
जो चमक रहा है

हो सकता है वह मेरी थकान हो
हो सकता है कुछ और

वह क्या है
यह मैं तुम पर छोडता हूँ
क्योंकि पसीना
मेरा निजी मामला नहीं है

सन् 47 को याद करते हुए

तुम्हे नूर मियाँ की याद है केदारनाथसिंह
गेहुँए नूर मिया
ठिगने नूर मिया
रामगढ बाजार से सुर्मा बेचकर
सबसे अन्त मे लौटने वाले नूर मिया
क्या तुम्हे कुछ भी याद है केदारनाथसिंह

तुम्हे याद है मदरसा
इमली का पेड
इमामबाडा
तुम्हे याद है शुरू से अखीर तक
उन्नीस का पहाडा
क्या तुम अपनी भूली हुई स्लेट पर
जोड घटाकर
यह निकाल सकते हो
कि एक दिन अचानक तुम्हारी बस्ती को छोडकर
क्यो चले गये थे नूर मियाँ

क्या तुम्हे पता है
इस समय वे कहाँ हैं
ढाका
या मुल्तान मे
क्या तुम बता सकते हो
हर साल कितने पत्ते गिरते है
पाकिस्तान मे

तुम चुप क्यो हो केदारनाथसिंह
क्या तुम्हारा गणित कमज़ार है

छाता

बीस बरस बाद
छाता लगाये हुए
पडरौना बाज़ार मे मुझे दिख गये बगाली बाबू

बीस बरस बाद मैं चिल्लाया
बगाली बाबू ! बगाली बाबू !
कसे हैं बगाली बाबू !

व मुडे
मुझे देखा
मुस्कुराये
और 'ठीक हूँ कहते हुए बढ गये आगे

मैं समझ न सका
बीस बरस बाद छाता लगाये हुए
कितने सुखी
या दुखी ह बगाली बाबू

देखा बस इतना
कि मेरी आँखों के आगे
चला जा रहा है एक छाता
सोचता हुआ
मुस्कुराता हुआ
ढाढस बँधाता हुआ
बोलता बतियाता हुआ छाता ।

भीमबेटका के गुफाचित्रों को देखते हुए

सितम्बर
उन्नीस सौ उन्नासी
दोपहर
काली चट्टान
चट्टान पर सूरज
सूरज के सामने खड़े हैं
हिन्दी के तीन चार लेखक कलाकार

चट्टान से
जंगली भैंसे की गंध आ रही है

किसी अदृश्य झील से
काली चोंच वाली एक बहुत बड़ी चिड़िया की तरह
झपट्टा मारते हुए आते हैं स्वामीनाथन
अम्बादास चुप हैं
नामवर सिंह कुछ कह रहे हैं
निर्मल वर्मा से
निर्मल पेड़ों से

पेड सूरज से
सूरज झाडियां मे बैठे हुए टिड्डो से

पर कहाँ हैं विष्णु खरे
यह कहाँ, कहाँ से आ रही है
विष्णु के हँसने की आवाज
भीमबेटका मे ।

नही नही
मैं साफ सुन रहा हूँ
ये काली चट्टानो पर
आदमी के हाथ की
लाल लाल जिन्दा लकीरें हैं
जो हवा मे गूज रही ह

मैं देख रहा हूँ
सामने की चट्टान पर
एक तीर सी तनी लकीर
एक जगली भसे का पीछा कर रही है

भागता हुआ भसा
घने जगलो मे छिप जाने से पहले
मुडकर देख लेता है स्वामीनाथन को
अम्बादास भसे की आँखें निकाल लेना चाहते हैं
अपनी रगो की कटोरी म

न वही भय है
न आश्वासन
न जाने की यातना
न आने की उम्मीद
न इच्छा
न मृत्यु
सिर्फ़ लाल-लाल जिन्दा लकीरें हैं

जिन्हें गुफा में छोड़कर
कोई चला गया है बाहर

और मैं खुद से पूछता हूँ
एक ज़िन्दा हाथ की लकीरों से सुन्दर
क्या होता है पृथ्वी पर ?

घोषणा

और अन्त मे
मैं घोषित करता हूँ
कि जो स्वस्थ है
वह सबसे अधिक बीमार है
जो हँसता है
उसे सहानुभूति की जरूरत है
जो चल रहा है
वह खडा है
जो बोल रहा है
वह कही न कही चुप है

मैं घोषित करता हूँ
कि जो सच है
वह सच नही है
जो जानता है
उस तक खबर अभी पहुँची ही नही
जो हुक्म देता है
वह डरा हुआ है
जोफसला देता है

उसे पता नही
वह गिरफ्तार है

मैं घोषित करता हू
कि इस अघोष युद्ध म
जहा बहुत कुछ नष्ट हो चुका है
वहा अब भी—अब भी
प्यार है

□□